दादा भगवान परिवार का

दिसम्बर - २०१८

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

विद्या विनय से शोभायमान होती है

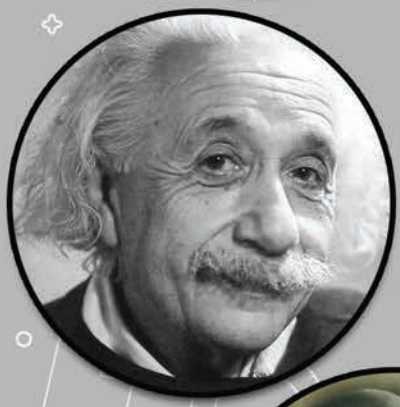

संपादकीय

बालमित्रों,

"विद्या विनय से शोभायमान होती है" - इस कहावत को हम बचपन से ही सुनते आए हैं। लेकिन क्या हम सचमुच इसे समझते हैं? इसे समझने के लिए तो हमें अपने अंदर पता लगाना पड़ेगा।

हम अपने टीचर्स को कितना रिस्पेक्ट देते हैं? उनका कहा हुआ दिल से स्वीकार करते हैं, वे डाँटे या पनिशमेन्ट दें फिर भी हम उनका पॉज़िटिव ही देखते हैं?... ऐसा तो बहुत कुछ चेक करना पड़ेगा।

और ऐसा विनय सिर्फ टीचर तक ही सीमित रखना है या किस-किस का रखना है?... इन सब की सुंदर समझ इस अंक में मिलेगी।

तो आइए, पढ़ें और अपने जीवन में विनय की कमी को पूरा करें।

-डिम्पल मेहता

विद्या विनय से शोभायमान होती है

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ६ अंक: ९
अखंड क्रमांक: ६९
दिसम्बर - २०१८

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O' महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते है...

प्रश्नकर्ता : जीवन की सफलता में अर्थात् पढ़ाई में विनय कितना ज़रूरी है?

दीपक भाई : विनय तो बहुत ज़रूरी है। कहते हैं न! कि विद्या विनय से शोभायमान होती है।

विनय अर्थात् क्या? जो अपने से दो डिग्री भी उच्च हैं उनके साथ नम्रता रखनी चाहिए। टीचर के साथ नम्रता रखनी है क्योंकि वे हमें सिखाते हैं। हम तो टीचरों को तुरंत सर्टीफिकेट दे देते हैं कि इन टीचर का तो कोई ठिकाना नहीं है, ये तो ऐसे हैं, वैसे हैं, ऐसे तरह-तरह से विचित्र बोल दे देते हैं। हमें पता नहीं रहता कि जहाँ से हमें ज्ञान प्राप्त करना है, यदि उनके लिए ज़रा भी उल्टा भाव करेंगे तो हमारे ज्ञान पर आवरण आ जाएगा। फिर वह ज्ञान हमें ग्रहण नहीं होगा। वे टीचर जो मुझे समझाएँगे उसकी प्राप्ति नहीं हो पाएगी।

विनय अर्थात् जैसे पानी का प्रवाह ऊपर से नीचे आता है वैसे ज्ञान का प्रवाह भी ऊपर से नीचे बहता है। इसलिए हम अपने से दो डिग्री ऊपर वालों के साथ नम्रता से रहेंगे तो ज्ञान प्रवाह अपने में उतरेगा। इसलिए विनय के बिना तो संसार में प्रगति ही नहीं होगी। विद्या भी प्राप्त नहीं होगी। और अध्यात्म में भी विनय के बिना शुरुआत नहीं है। धर्म में भी विनय चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कितने प्रकार से अपना विनय चूक जाते हैं?

दादाश्री : विनय चूका किसे कहेंगे कि टीचरों की गलतियाँ निकालना, उनके दोष देखना, उनकी हँसी-मज़ाक उड़ाना, उनके लिए कुछ खास टाइटल दे देना कि "ये ऐसे हैं, वे वैसे हैं" उनको नाम दे देते हैं। यह सब विनय चूका कहा जाएगा। एक अक्षर भी उल्टा बोलो न, तो वह अविनय कहा जाएगा। विनय चूका कहा जाएगा। यदि टीचर ने होमवर्क ज्यादा दिया हो तो, ये तो, बस, इतना ज्यादा होमवर्क दे देते हैं और दिमाग़ खराब कर देते हैं। वे खराब हैं। ऐसा सब नहीं बोलते। हमसे जितना हो उतना करेंगे, नहीं हो तो दूसरे दिन करेंगे, लेकिन खराब भाव नहीं करने चाहिए। खराब भाव किए, उसे विनय चूका कहा जाएगा। थोड़ी सी भी गलती निकाली कि "ये ऐसे हैं" और "वे वैसे हैं" यह विनय चूका कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : विनय नहीं रखेंगे तो क्या नुकसान होगा?

दीपक भाई : जो टीचर की गलती निकालता है उस इंसान को संस्कारी ही नहीं कहा जाएगा। सभी टीचर एक्सपर्ट नहीं भी हो। लेकिन हम से तो ज्यादा ही आता है। वे जितना सिखाते हैं उतना सीख लें। हमें तो बिल्कुल ही नहीं आता। उससे अच्छा कुछ तो सिखेंगे। अतः ऐसा रखना पड़ेगा। विनय रखना पड़ेगा। विनय चूकने से हम किसी का नुकसान नहीं करते, अपना ही नुकसान करते हैं। हमारा सुख चला जाएगा। हमारे ज्ञान पर आवरण आ जाएगा। हमारी समझ चली जाएगी। हमें अधोगति में जाना पड़ेगा।

गुरु का विनय नम्रता लाता है। गुरु खुश हो जाएँ, ऐसा करना, विनय में रहा कहा जाएगा।

यह तो

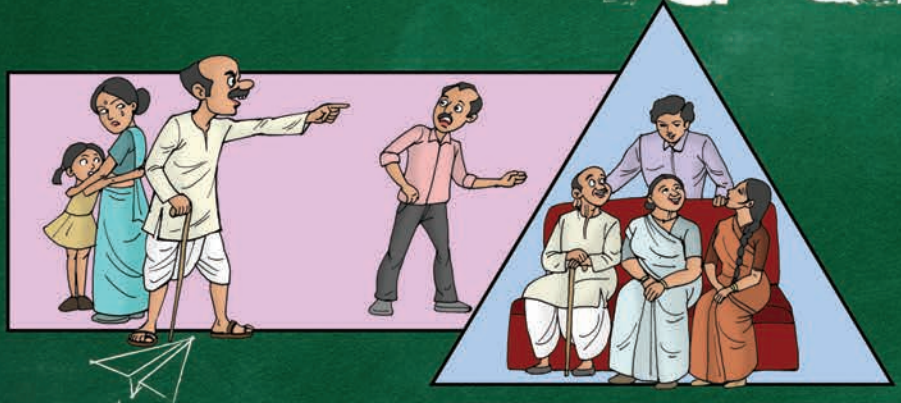

दूध में चीनी होगी तो वह घूल जाएगी और कंकड़ होंगे तो लोग क्या करेंगे? उठाकर बाहर फेंक देंगे। वैसे ही विनय वाला घूल-मिल जाता है। सभी के साथ मिल जाता है। और अविनय वाला कंकड़ की तरह खड़खड़ाता है इसलिए उसे सभी अलग कर देते हैं कि हमें तुम्हारे जैसे नहीं चाहिए।

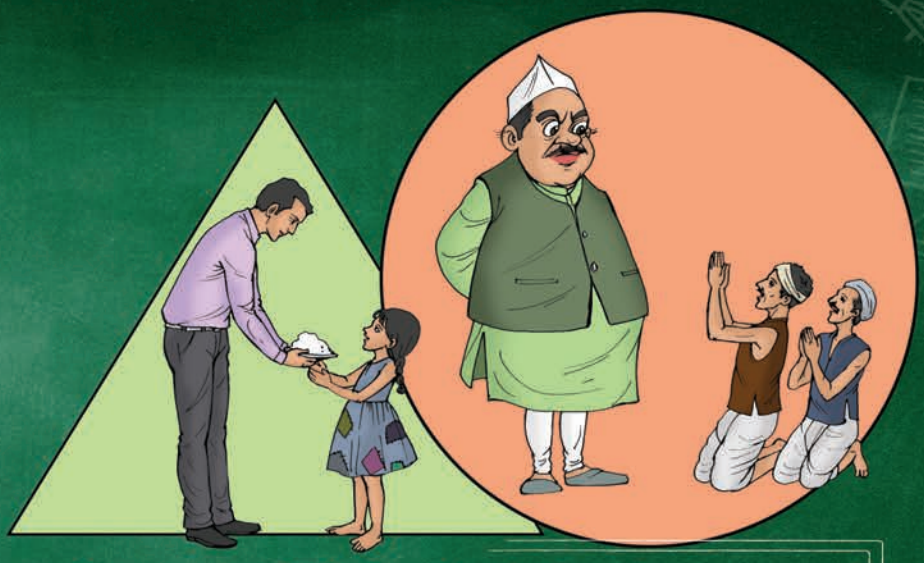

विनय वाला परायों के लिए जीता है और अविनय वाला खुद के लिए जीता है। खुद को किसमें सेफ साइड है वही देखता है। और सभी की वैल्यू खत्म करके रख देता है, तिरस्कार करता है।

नई ही बात है !

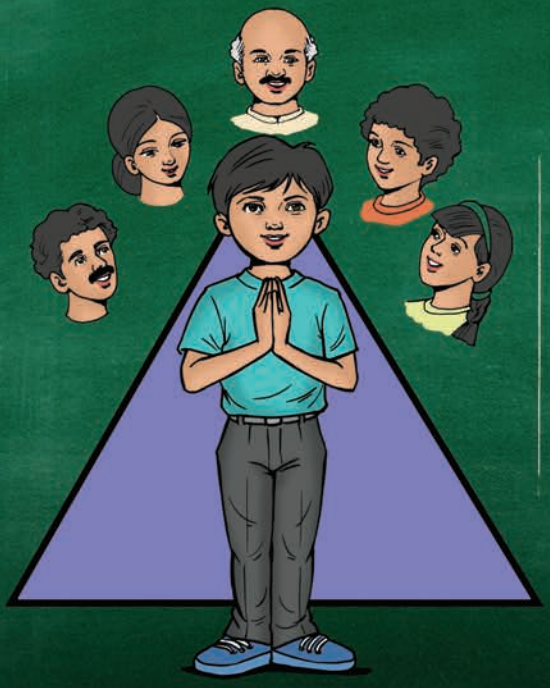

हर एक के अंदर आत्मा है और हर एक में आत्मा का कुछ ज्ञान अंदर प्रकट हुआ है। अत: विनय में रहेंगे तो हम में वह ज्ञान आ जाएगा। उन्हें उपकारी मानोगे और उनके विनय में रहोगे तो काम होगा।

सफलता का श्रेय

लाइब्रेरी की घड़ी में दस बजे थे।
ध्रुव, कम ऑन, वी आर लेट फॉर द लेक्चर।

नहीं यार। उस नट-केस, नटराज के लेक्चर में मैं नहीं आ रहा। वे जो समझाने में एक घंटा लगाते हैं, वह तो मैं दस मिनट में सीखकर, तुम्हें सिखा दूँ।

यार, कभी तो कन्फ्यूजन होता है कि प्रोफेसर वे हैं या तुम। ओ.के. मिस्टर जीनियस। सी. यू. आफ्टर क्लास।

एक घंटे बाद ध्रुव लाइब्रेरी के बाहर चक्कर लगाने गया। लाइब्रेरी के नोटिस बॉर्ड पर उसकी नज़र पड़ी।

MEET & GREET EVENT
अपने कॉलेज का गौरव भूतपूर्व विद्यार्थी
मीट एन्ड ग्रीट इवेन्ट, अपने कॉलेज का गौरव, भूतपूर्व विद्यार्थी एन्ड ग्रेट इन्डस्ट्रियलिस्ट - आकाश परीख...

इवेन्ट के दिन,

प्रिन्सिपल सर ने आकाश परीख का सुंदर परिचय दिया और कॉलेज में आने के लिए आभार व्यक्त किया।

और अब, आकाश आपके साथ अपने अनुभव की बातें करेंगे।

थेन्क यू प्रिन्सिपल सर। हेल्लो एवरीवन। आई एम सो ग्लेड देट...

और उनका वाक्य अधूरा ही रह गया। दो क्षण के लिए उनकी नज़र दरवाज़े पर अटक गई, और वे फटाफट स्टेज से नीचे उतरे...

EXI

अपने प्रिय प्रोफेसर को आते हुए देखकर, आकाश भाई उनके पास दौड़कर गए, और दिल से चरणस्पर्श किया। बहुत ही विनयपूर्वक आकाश भाई, प्रोफेसर नटराजन को स्टेज पर ले आए।

ऑडियन्स में बैठे हुए विद्यार्थी स्तब्ध होकर देखते ही रह गए। ध्रुव को तो बैठे-बैठे ही चक्कर आ गया।

इतने बड़े और सफल व्यक्ति ने, इस नट-केस के पैर छूए। सो स्ट्रेंज।

फेन्ड्स, करीब दस साल पहले इस कॉलेज की धरती पर मैंने पहली बार कदम रखा था। आज भी वह दिन मुझे याद है।

उस दिन, मैं रिक्शा में से बैग लेकर बाहर उतरा। सामने से, खादी के मैले-कुचेले कपड़े पहने हुए एक बुजुर्ग आए।

कहाँ से आ रहे हो बेटा? तुम्हारा सामान वज़नदार लग रहा है। उठा लूँ?
अच्छा हुआ, "बुड्ढे" ने मेरा वज़नदार बिस्तर उठा लिया।
दूसरे दिन, प्राधानाचार्य की कुर्सी पर उसी "बुड्ढे" को देखकर, मैं चौंक गया। वह प्रोफेसर नटराजन थे।
पूरे कॉलेज समय के दौरान सर ने इस प्रसंग का उल्लेख कभी नहीं किया। मैंने कभी भी उनकी आँखों में अपने अविनय की नोंध नहीं देखी।
उस साल प्रेसिडेन्ट ऑफ इन्डिया ने सर को "एवार्ड फॉर एक्सिलेन्ट इन डिज़ाइन" से सम्मानित किया था। लेकिन सर के व्यवहार में अभिमान का एक अंश भी नहीं देखा।

जैसे-जैसे मुझे सर की पहचान होती गई, वैसे-वैसे मैं उनसे और भी ज्यादा सीखता गया। सर के नम्र व्यवहार ने मेरा मान खत्म कर दिया।

सर से सिर्फ मैं इंजीनियरिंग ही नहीं, बल्कि लाइफ लेसन्स सीखा हूँ। मेरी सफलता का श्रेय मैं नटराजन सर को अर्पण करता हूँ।

और आकाश फिर से सर के सामने झुक गए। नटराजन सर ने प्रेम से आकाश भाई के सिर पर हाथ रखा।

यह दृश्य देखकर, ध्रुव की आँखों से पर्दा हट गया। उसे अपनी भूल का एहसास हुआ।

अपनी होशियारी की तुमाखी में मैंने कभी भी नटराजन सर के पॉज़िटिव नहीं देखे। और उनसे सीखने के सभी दरवाज़े बंद कर दिए।

मैं तो आकाश भाई की सफलता से आश्चर्य हो गया था। लेकिन उनकी यह सफलता, उनके अद्भुत विनय से सुशोभित है।

नटराजन सर की सही पहचान होने पर ध्रुव भी मन ही मन सर के सामने झुक गया।

प्रोक्सी टीचर

रोज़ की तरह आज भी क्लास में उधम हो रहा था। अवंतिका ने ब्लेकबोर्ड पर एक कार्टून बनाया और नीचे एक कवेश्चन मार्क लगा दिया।

अवंतिका ने पूछा, "बोलो बोलो," यह कौन है?"

"मिस्टर पंड्या, और कौन।" विवेक ज़ोर से बोला और पूरा क्लास हँस पड़ा।

तभी ईशान हाँफता, हाँफता क्लासरूम में आया, "लिसन एवरीवन, प्लीज़ बी क्वाईट। आई हैव अ गुड़ न्यूज़।"

क्लास में शांति फैल गई।

"मिस्टर पंड्या इज़ एब्सेन्ट टु डे" ईशान ने ज़ोर से अनाउन्स किया। क्लास ने तालियों से ईशान की अनाउन्समेन्ट का स्वागत किया। स्तवन और विनीत तो अपनी जगह पर खड़े होकर डान्स करने लगे।

"सो, मिस्टर खबरी, इसका मतलब यह हुआ कि कोई प्रोक्सी टीचर आएँगे?" अवंतिका ने ईशान से पूछा।

"अवंतिका मैडम, अभी यह खबर हमारी न्यूज़ एजेन्सी को नहीं मिली।" ईशान ने न्यूज़ रिपॉर्टर की तरह जवाब दिया। और फिर गप्प मारते हुए कहा, "कोई आएगा, फिर भी हमारे क्लास में कितना टिकेगा?"

विवेक ने फिल्मी स्टाइल में ईशान का समर्थन किया, "और वैसे भी, इस प्लेनेट पर ऐसा कोई सब्स्टिट्यूट टीचर पैदा ही नहीं हुआ, जो हमारे क्लास को..." अचानक, उसकी नज़र दरवाज़े के पास खड़ी हुई प्रोक्सी टीचर पर पड़ी। शांति से एक कोने में खड़े होकर वे इस तमाशे को देख रहीं थीं। विवेक का वाक्य अधूरा और मूँह खुला रह गया। वह चूपचाप अपनी जगह पर जाकर बैठ गया।

टीचर ने अपना पर्स टेबल पर रखा। चेहरे पर एक निखालस हास्य के साथ अपना परिचय दिया, "हेल्लो एवरीवन। मेरा नाम सुनंदा परीख है। मिस्टर पंड्या इज़ एब्सेन्ट टु डे। एन्ड आई एम योर प्रोक्सी टीचर। आई विल बी..."

टीचर की बात अटकाकर अवंतिका बोली, "टीचर प्लीज़ रिलैक्स। कुछ पढ़ाने की ज़रूरत नहीं है। पढ़-पढ़कर हम थक गए हैं। एन्ड कैन वी ऑल रिलैक्स टु?"

अवंतिका की इस कमेन्ट पर पूरा क्लास ज़ोर से हँस पड़ा।

"आई लाइक द आइडिया। मैं आपको नहीं पढ़ाऊँगी," टीचर ने अपनी कंडिशन रखी। ऐसी अनपेक्षित बात सुनकर, सभी स्तब्ध हो गए।

बोलो "कौन पहले आएगा?" टीचर ने पूछा। किसी ने हाथ उँचा नहीं किया इसलिए टीचर ने अवंतिका के सामने देखकर पूछा, "हाउ एबाउट यू?"

"सॉरी, मैं स्टूडन्ट हूँ, टीचर नहीं। और वैसे भी, मुझे मैथमैटिक्स खास नहीं आता।" अवंतिका ने अकड़कर जवाब दिया।

"लेकिन डियर, मैंने मैथमैटिक्स पढ़ाने के लिए कहाँ कहा है? आपको जो पढ़ाना है पढ़ा सकते हो। आपको किसमें इन्ट्रेस्ट है" टीचर ने प्रेम से पूछा।

"मुझे? मुझे कार्टून बनाना बहुत अच्छा लगता है," अवंतिका ने उत्साहपूर्वक कहा।

"देटस् अ वेरी क्रिएटिव आर्ट।" टीचर ने अवंतिका के इन्ट्रेस्ट को प्रोत्साहन दिया। "हमें भी कार्टून बनाने की एकाद बात सिखाओगे?"

"श्योर।" कहकर, अवंतिका ब्लेकबॉर्ड के पास गई। अपना बनाया हुआ पंड्या टीचर का कार्टून देखकर, उसे थोड़ी शर्म आई। फटाफट डस्टर लेकर उसे मिटा दिया। आँखों में एक खास चमक के साथ, अवंतिका ने कार्टून बनाने के कुछ तरीके सिखाए। उसके बाद, कई स्टूडन्ट्स् ने आकर तरह-तरह की बातें सिखाईं। किसी ने क्राफ्ट सिखाया तो किसी ने एस्ट्रोनोमी और टेलिस्कोप की बातें बताईं।

सभी ने अपने इन्ट्रेस्ट के सब्जेक्ट के बारे में एकाद बात बताई। आश्चर्य की बात यह थी कि आज तरह-तरह की बातें सिखने में किसी को बोरियत नहीं हुई। सभी ने ध्यान से अपने क्लास-मेट्स की बातें सुनी और दिल में भी उतारीं।

सभी की बारी पूरी होने के बाद सुनंदा टीचर ने बच्चों की तरह पूछा, "तो, अब मेरी बारी?"

"यस," पूरा क्लास एक साथ बोल उठा।

सुनंदा टीचर मूँह पर हँसी दिखाई दी। "ओ.के. ... तो मैं आपको एक स्टोरी बताती हूँ।"

"एक छोटा सा बच्चा था, करीब आपकी उम्र का। उसका नाम अकीरो आकाशी था। जापान के एक गाँव में अकीरो अपने पिता के साथ रहता था। अकीरो के पिताजी उस समय के बहुत ही बड़े स्वोर्डमेन सामुराई (तलवारबाज) थे। अकीरो को भी अपने पिताजी की तरह स्वोर्डमेन बनना था। लेकिन एक प्रॉब्लम था। अकीरो में स्वोर्डमेनशिप की कोई कुशलता नहीं थी। इसलिए पिताजी ने अकीरो को सिखाने के लिए मना कर दिया। अकीरो थोड़ा निराश हो गया। लेकिन उसे तलवारबाजी सिखने की बहुत तमन्ना थी। हिंमत करके वह ताकाहाशी सुजुकी नामक एक प्रसिद्ध टीचर के पास गया और तलवारबाजी सीखने के लिए विनती की। ताकाहाशी ने बच्चे को देखा। उन्हें पता चल गया कि बच्चे में सिखने की बहुत तमन्ना है, लेकिन कुशलता नहीं है।"

"ठीक है, मैं तुझे सिखाऊँगा।" ताकाहाशी ने कहा, "लेकिन जब समय आएगा तब। आज से तुम मेरे साथ रहना और मेरे काम में मदद करना।"

अकीरो के उत्साह का पार नहीं था, "जी, गुरुजी।"

एक साल बीत गया। अकीरो का पूरा समय गुरुजी के काम करने में गया। कभी वह रसोई में मदद करता तो कभी सफाई में। इस समय के दौरान उसने तलवार का स्पर्श भी नहीं किया।

लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि गुरुजी के प्रति उसके विनय में ज़रा भी कमी नहीं आई। उसके मन में ऐसा ख्याल भी नहीं आया कि, "अब तो ऐसे काम बहुत हो गए। गुरुजी मुझे कब सिखाएँगे।" उसे तो अटूट श्रद्धा थी कि जब समय आएगा तब गुरुजी उसे तलवारबाजी ज़रूर सिखाएँगे।

यह श्रद्धा दिल में रखकर जी रहा था। दूसरा साल भी इसी प्रकार बीत गया। एक दिन वह बगीचे में काम कर रहा था। अचानक गुरुजी ने पीछे से आकर लकड़ी की तलवार से उस पर प्रहार किया।

गुरुजी ने कहा, "स्व बचाव करना सीखना यह तलवारबाजी का एक बड़ा नियम है।"

अकीरो का यह पहला पाठ था। बस, उस दिन से गुरुजी के ऐसे अचानक प्रहारों से बचने के लिए वह तैयार रहता। एक क्षण भी ऐसी नहीं बीती कि उसे पहले प्रहार का स्वाद भुलाया हो। देखते-देखते अकीरो तलवारबाजी के सभी नियम

"जानते हो फ्रेन्डस्, अकीरो जैसा डल स्टूडन्ट, इतने कम समय में इतना बड़ा स्वोर्डमैन कैसे बना?" टीचर ने क्लास से पूछा।

सीख गया। गुरुजी की अपेक्षा से भी वह बढ़कर सिद्ध हुआ।

अकीरों आकाशी दुनिया का सब से बड़ा स्वोर्डमेन सामुराई बना।

पूरा क्लास एकाग्रतापूर्वक सुनंदा टीचर की स्टोरी सुन रहा था।

"जानते हो फ्रेन्डस्, अकीरो जैसा डल स्टूडन्ट, इतने कम समय में इतना बड़ा स्वोर्डमेन कैसे बना?" टीचर ने क्लास से पूछा।

कईयों के मन में यह प्रश्न हुआ था। लेकिन, किसी के पास जवाब नहीं था।

टीचर ने बात का रहस्य खोला, "अकीरो में कुशलता कम थी, लेकिन विनय में कोई कमी नहीं थी। जिस टीचर से उसे ज्ञान ग्रहण करना था। उनके पूरे विनय में रहा। धीरजपूर्वक रहा और टीचर पर अटूट श्रद्धा रखी। नियम ऐसा है कि जिनसे ज्ञान प्राप्त करना है, उनके विनय में रहेंगे तो ज्ञान का प्रवाह अपने में उतरेगा। लेकिन यदि हम उनका नेगेटिव देखेंगे, उनका मज़ाक उड़ाएँगे या उनके प्रति अभाव रखेंगे तो ज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी। और हमारा सुख चला जाएगा।"

क्लास में शांति फैल गई। टीचर्स का नेगेटिव देखने में या उनकी मज़ाक उड़ाने में किसी ने कुछ बाकी ही नहीं रखा था।

टीचर ने पूछा, "आज आप सब एक दूसरे के टीचर बनकर, कितना नया सीखे, सही बात है न? लेकिन, यदि आपने एक दूसरे के नेगेटिव देखे होते, एक दूसरे की मज़ाक उड़ाई होती, तो क्या ऐसी नई-नई बातें सीखने का आनंद मिला होता?"

सभी ने सिर हिलाकर "नहीं" कहा। सभी के चेहरे पर अपनी की हुई भूलों का एहसास था।

तभी घंटी बज गई और क्लास पूरा हो गया। आज स्कूल की हिस्ट्री में पहली बार किसी को क्लास में से छूटकर बाहर जाने की जल्दी नहीं थी।

सुनंदा टीचर की बात दिल में उतारकर, कल से नई शुरुआत करने का उत्साह सभी के अंतर जाग गया था।

जीवंत उदाहरण

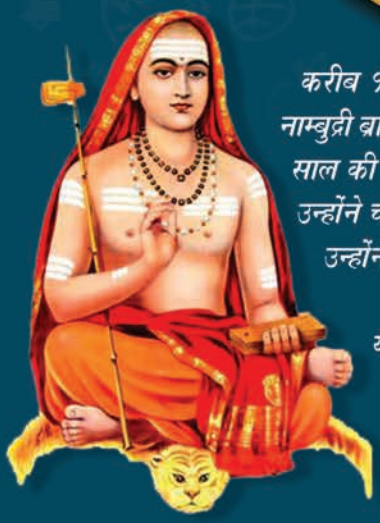

करीब १२०० साल पहले जगत्गुरु आदि शंकाराचार्य का जन्म केरल के कालडी गाँव में नाम्बुद्री ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे शांत, गंभीर और तीक्ष्ण बुद्धि वाले थे। तीन साल की उम्र में ही उन्होंने संस्कृत और मलयालम भाषा सीख लीं थी। पाँच साल की उम्र में उन्होंने चारों वेद और अठारह पुराण का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। और आठ साल की उम्र में उन्होंने सन्यास ले लिया था।

पदयात्रा द्वारा उन्होंने भारत भ्रमण किया और भारतीय संस्कृति को अमूल्य योगदान दिया।

भारत भ्रमण के दौरान उनके अनेक शिष्य बने, उनमें से एक प्रमुख शिष्य का नाम गीरि था।

गीरि की श्री शंकराचार्य के प्रति गुरुभक्ति की तुलना श्री रामचंद्र जी के परम भक्त हनुमान जी के साथ भी हुई है।

गुरु की सेवा के अलावा गीरि को जीवन में और किसी में भी रुचि नहीं थी। अन्य शिष्यों को गीरि की ऐसी असामान्य गुरु भक्ति विचित्र लगती थी। शास्त्रों की जानकारी कम होने की वजह से कई बार अन्य शिष्य गीरि का मज़ाक भी उड़ाते थे।

एक दिन वर्ग का समय हो गया था। लेकिन गीरि अनुपस्थित थे। वे नदी किनारे गुरु के कपड़े धो रहे थे। शिष्यों ने शंकराचार्य से उपदेश शुरू करने की विनती की।

शंकराचार्य ने कहा, "गीरि को आने दो।"

पद्मपाद नामक शिष्य को यह बात अच्छी नहीं लगी। "ये दीवार तो उपस्थित हैं। गीरि की क्या ज़रूरत है। वैसे भी इस दीवार को जितना समझ में आएगा उससे ज्यादा गीरि को कहाँ समझ में आने वाला है?" ऐसा कहकर पद्मपाद ने गीरि का मज़ाक उड़ाया।

पद्मपाद के ऐसे अविवेकी शब्द शंकराचार्य को पसंद नहीं आए। मौन रहकर उन्होंने गीरि की प्रतीक्षा करना योग्य समझा।

उस दिन जब गीरि वर्ग में आया, तब उनकी आध्यात्मिक स्थिति कुछ और ही थी। उन्होंने अपने गुरु की शंकराचार्य के लिए आठ पदों की अद्भुत स्तुति रची। जो तोटक अष्टक नाम से प्रसिद्ध हुई। जो शिष्य गीरि को कम अक्ल वाला समझते थे। वे गिरी के मुख से ऐसी सुंदर रचना सुनकर स्तब्ध हो गए।

उस दिन से श्री शंकराचार्य के शिष्य गीरि, तोटकाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।

जो शास्त्र समझने में शिष्यों को सालों लगे, उन्हें गीरि ने कुछ ही समय धारण कर लिया।

देखा मित्रों, गुरुभक्ति और विनय का कैसा अद्भुत परिणाम आता है। गुरु के प्रति अपार भक्ति और विनय से, गीरि ने गुरु का राजीपा प्राप्त करके, आध्यात्मिक ज्ञान सहज ढंग से हृदय में धारण कर लिया।

Kids Kastle

Akram Joy Ride

Puppet Show

Amphitheatre

Dada In My Life

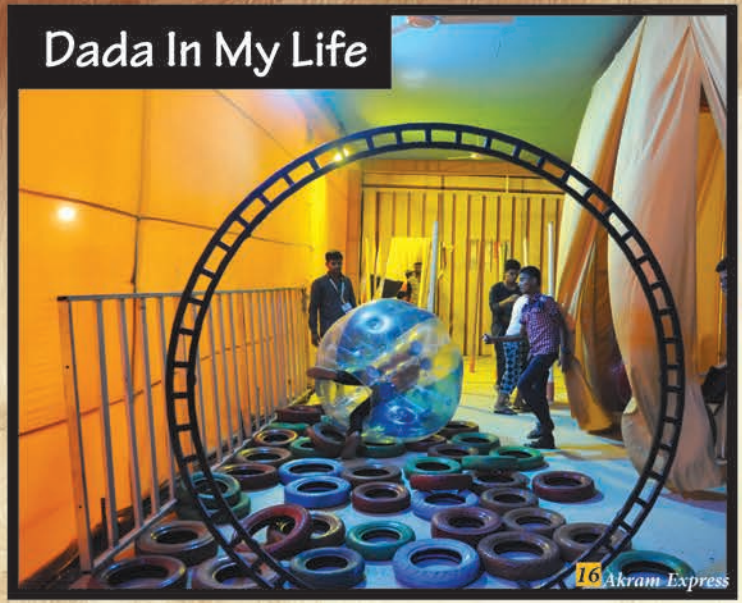

Terrific Terry

The Detective Agency

Aage Se Right

Mit Sakti Hai ye Duriya

Selfi Li kya?

GNC DAY With Pujayshree

ड्रॉइंग कॉम्पिटिशन

इनाम वितरण

पूज्यश्री के साथ लंच

पूज्यश्री का स्वागत

पूज्यश्री के साथ वॉक

Key Of Life Drama

Akram Express

December 2018
Year : 6, Issue : 9
Conti. Issue No.: 69

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

दीपक भाई : मैं तो दो साल के बच्चे के भी विनय में रहता हूँ। वह "जय सच्चिदानंद" कहता है तो मैं भी दो हाथ जोड़कर "जय सच्चिदानंद" कहता हूँ। क्योंकि वह दो साल का नहीं है। ८० + २ =८२ साल का है। इसलिए फिर उसके विनय में रहता हूँ।

है न विनय की पराकाष्ठा !

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** *या* **Kids Website** *की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।*

https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस केऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने केदौरान जो रकमदी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025